International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

Original Article

नाथपंथ साहित्य : शिल्पगत अनुशीलन

शितोळे सविता मुगुटराव[1], प्रो. डॉ. सुनीता मच्छिंद्र मोटे[2]

[1]शोधार्थी, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज, अहमदनगर (स्वशासी)

[2]शोध निर्देशिका, न्यू आर्ट्स, कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज, अहमदनगर (स्वशासी)

Manuscript ID: IJAAR-130425
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 4
March – April 2026
Pp. 151 - 159

Submitted: 23 Mar. 2026
Revised: 05 Apr. 2026
Accepted: 06 Apr. 2026
Published: 10 Apr. 2026

Corresponding Author:
शितोळे सविता मुगुटराव

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.20330367

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.20330367

Creative Commons

OPEN ACCESS

सारांश (Abstract):

नाथपंथ आदिकालीन हिंदी साहित्य में धार्मिक साहित्य शिल्प विधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण विशिष्ट धारा है। नाथपंथ ने भारतीय आध्यात्मिक परंपरा, हठयोग-साधना और दर्शन को गहराई से प्रभावित करने के साथ-साथ हिंदी साहित्य की लोककला तथा शिल्प-संस्कृति को भी समृद्ध किया। इसने लोक-जीवन, लोककला और साहित्य में अपनी अलग और स्थायी पहचान स्थापित की।नाथ योगियों ने अपने आध्यात्मिक अनुभवों, कठोर योग-साधना और आत्मज्ञान के सिद्धांतों को साहित्यिक रूप देकर अभिव्यक्त किया। नाथपंथ के साहित्य में आध्यात्मिक भावनाओं और रहस्यों को व्यक्त करने के लिए कई विशिष्ट शिल्पगत उपकरणों का प्रयोग किया गया, जैसे - प्रकृति चित्रण,सरल लोकभाषा,संध्या भाषा,प्रतीकात्मक शैली,उलटबांसी,रहस्यात्मक अभिव्यक्ति।नाथपंथ साहित्य का शिल्प अत्यंत मौलिक और विशिष्ट है। इसमें भाषा, शैली, बिंब, प्रतीक और विभिन्न काव्यरूपों का विशेष महत्व है।

मुख्य शब्द (Key Words): आदिकाल, नाथ साहित्य, शिल्प विधान, हठयोग, आध्यात्मिकता, लोककला और शिल्प-संस्कृति, लोकभाषा, संधा-भाषा, प्रतीकात्मकता, बिंब, रहस्यात्मकता, उलटबासी।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
शितोळे सविता मुगुटराव, प्रो. डॉ. सुनीता मच्छिंद्र मोटे (2026). नाथपंथ साहित्य : शिल्पगत अनुशीलन. International Journal of Advance and Applied Research, 13(4), 151 - 159. https://doi.org/10.5281/zenodo.20330367

प्रस्तावना (Introduction):

नाथ साहित्य का उद्भव मध्यकालीन भारत में आठवीं शती से चौदवीं शती में हुआ। डॉ.नगेन्द्रजी का मत है कि नाथ परंपरा का विकास सिद्धों की वाममार्गी भोग प्रधान योग साधना पद्धति की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। “आ.रामचंद्र शुक्ल के अनुसार नाथपंथ का मूल(जड़ें)बौद्ध धर्म की वज्रयान परंपरा से भी संबंधित मानी जाती हैं।इसी संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन का मत है कि नाथपंथ सिद्ध परंपरा का विकसित और संगठित रूप

है। डॉ.रामकुमार वर्मा के अनुसार नाथपंथ का उत्कर्ष काल बारहवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य माना जाता है। वहीं डॉ.हजारी प्रसाद द्विवेदी ने नाथ संप्रदाय को सिद्धमत,योगमार्ग,अवधूत मत तथा योग संप्रदाय जैसे विभिन्न नामों से संबोधित किया है। नाथ परंपरा का मूल आधार योग साधना और आध्यात्मिक अनुशासन है।नाथसंप्रदाय ने आदिनाथ शिव को आराध्य गुरु माना और नाथपंथ को शैव परंपरा से जोड़ा।गोरखनाथ ने इस संप्रदाय को सिद्धों से अलग कर व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

नवनाथ परिचय – 1.गुरु मच्छीद्रनाथ 2.गोरखनाथ 3.गहिनीनाथ 4.जालिंदरनाथ 5.कानिफनाथ 6.भर्तुहरिनाथ 7.नागनाथ 8.रेवणनाथ 9.चर्पटीनाथ

नाथ योगियों ने अपने आध्यात्मिक अनुभवों और साधना संबंधी सिद्धांतों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए एक विशिष्ट साहित्यिक परंपरा का निर्माण किया। इस साहित्य में उपदेशात्मकता, गुरु की महिमा, इंद्रिय-संयम, प्राण-साधना, वैराग्य, कुंडलिनी जागरण तथा शून्य समाधि जैसे योगिक तत्वों का व्यापक उल्लेख मिलता है। नाथ साहित्य में वैचारिक दृढ़ता के बावजूद,विशिष्ट शिल्प विधान से हिंदी संत साहित्य की परंपरा को भी समृद्ध किया।

शोध समस्या:

1) नाथपंथ साहित्य की भाषा और शैली की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
2) नाथ साहित्य में प्रयुक्त प्रतीकों और बिंबों का स्वरूप क्या है?

शोध का उद्देश्य:

1) नाथपंथ साहित्य के शिल्पगत स्वरूप का अध्ययन करना।
2) नाथ साहित्य की भाषा और शैली का विश्लेषण करना।
3) नाथपंथ साहित्य में प्रयुक्त प्रतीकों और बिंबों का अध्ययन करना।

शोध की पद्धति:

1) ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक शोध की पद्धति का प्रयोग किया गया है।
2) प्राथमिक स्रोतों के रूप में गोरखबानी, और नाथ सिद्धों के वचन का उपयोग किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध आलेख और इतिहास ग्रंथ सम्मिलित हैं।

विषय विवेचन:

नाथ साहित्य मुख्यतः साधना, योग, अद्वैत भाव, लौकिक यथार्थ और सहज बोध का उद्घाटन करता है।साहित्यिक मूल्य धार्मिक दृष्टि के साथ भाषा, शैली और विचार-सरणी की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।नाथ साहित्य का शिल्प साधना की भव्यता और सरलता दोनों को एक साथ व्यक्त करता है।साहित्य में गहन आध्यात्मिकता को सहज लोक भाषा में ढालने की विलक्षण क्षमता है। एक ओर इसका भाव पक्ष आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है, वहीं दूसरी ओर इसका शिल्प भी अत्यंत विशिष्ट और प्रभावी है। नाथपंथ भारतीय साधना परंपरा का एक विशिष्ट योगिक और आध्यात्मिक मार्ग है, जिसका साहित्यिक स्वरूप अत्यंत समृद्ध, प्रतीकात्मक और प्रयोगधर्मी है। नाथ साहित्य दार्शनिक, धार्मिक साहित्य शिल्प की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

नाथ साहित्य की शिल्पगत विशेषताएँ:

1) लोकबोलियों का प्रयोग
2) सरलता और संक्षिप्तता
3) प्रतीकात्मकता, गूढ़ार्थ और बिंब
4) उलटबासियाँ
5) रहस्यवाद
6) संवाद और प्रश्नोत्तर शैली
7) मुक्तक शैली
8) छंद - (दोहा, चौपाई, सोरठा, पद आदि का प्रयोग।)

1) लोकबोलियों का प्रयोग:

नाथपंथ साहित्य में लोकभाषाओं और बोलियों का प्रयोग सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर अत्यधिक हुआ है।साधारण जनता को योग और साधना का संदेश देने के लिए संस्कृत जैसी कठिन भाषा के बजाय लोकभाषाओं का चयन किया।हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार“नाथों ने 'कूपजल' के समान ठहरी हुई संस्कृत के स्थान पर 'बहता नीर' रूपी लोकभाषा को चुना।यह भाषा 'सधुक्कड़ी' कहलाई, जो राजस्थानी, हरयाणवी, पंजाबी और खड़ी बोली का समन्वय थी। यह भाषाई विविधता उनके अखिल भारतीय भ्रमण और व्यापक सामाजिक संपर्क का परिणाम थी।“ लोकबोलियाँ समाज की जीवन-शैली, रीति-रिवाज और लोकमानस को अभिव्यक्त करती थीं। लोकभाषा में विचारों को व्यक्त करने से जटिल योगिक और आध्यात्मिक अवधारणाएँ भी सरल रूप में समझाई।

“मन ही मन साधो, मन ही मन जपो।”- गोरखबानी (लोकभाषा की सहजता को दर्शाती है।)

“सहज समाधि सदा सुखकारी।”- सिद्ध गाथाएँ (अपभ्रंश और लोकभाषा का मिश्रण है।)

“साँचे गुरु की बात सुनो, झूठे जग से नाता तोड़ो।”- भर्तृहरिनाथ की वाणी (लोकजीवन की भाषा में आध्यात्मिक उपदेश देती है।)

"गगन सिखर महिं बालक बोलै, ताका नांव धरहुगे कैसा।– (गोरखवाणी,सबदी -5 पृ.-2) गोरखनाथ कहते हैं कि जब योगी साधना के शिखर(सहस्रार चक्र) पर पहुँचता है, तो उसे एक दिव्य ध्वनि(अनाहत नाद) सुनाई देती है।वह निराकार ईश्वर किसी सीमा या नाम में नहीं बँधा है, वह तो रूप से परे एक अनुभव है।

“अलख निरंजन, देखे न कोई।”- रहस्यात्मक शैली लोकभाषा में व्यक्त की गई।

"नौ लख पातरि आगै नाचै, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसैं मन लै जोगी खेलै,तब अंतरि बस भंडारा॥"-(गोरखवाणी सबदी-2 पृ.-1)

"गोरखनाथ कहते हैं, साधक के सामने संसार के अनगिनत आकर्षण और मोह-माया नाचते हैं। लेकिन जो योगी इन बाहरी प्रलोभनों को छोड़कर अपने भीतर 'सहज' (शून्य) में स्थित हो जाता है, उसे अपने अंदर ही ईश्वर का अनंत भंडार मिल जाता है।

"अंजन माहि निरंजन भेट्या, तिल मुखि भेट्या तेलं। मूरति माहि अमूरति भेट्या, भया निरंतर खेलं॥"(जैसे तिल के भीतर तेल छिपा होता है,वैसे ही इस दृश्यमान संसार(अंजन) के भीतर वह अदृश्य परमात्मा(निरंजन) व्याप्त है। जब साधक इस आकारवाली दुनिया में उस निराकार के दर्शन कर लेता है, तो उसकी साधना एक निरंतर आनंद बन जाती है।)

नाथ साहित्य में उपदेश की भाषा पुरानी टकसाली हिंदी है, साखी की भाषा खड़ीबोली राजस्थानी मिश्रित सामान्य भाषा सधुक्कड़ी है ब्रज,अवधी और भोजपुरी अपभ्रंश और प्राकृत,जैसी बोलियों के शब्द मिलते हैं।नाथपंथ साहित्य

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

आज भी लोकगीतों, लोककथाओं और संत परंपरा में जीवित है।"

2) सरलता और संक्षिप्तता:

नाथपंथ साहित्य में योग और साधना की जटिल अवधारणाओं को सीधे और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया। इससे यह साहित्य विद्वानों के साथ–साथ सामान्य जन के लिए भी सुलभ हो गया। कठिन संस्कृत शब्दावली के स्थान पर लोकभाषा और बोलियों के सहज शब्दों का प्रयोग किया। गुरु-शिष्य संवाद में संक्षिप्त वाक्यों द्वारा शिक्षा देना।लम्बे विवरण के बजाय छोटे-छोटे वाक्यों में गहन आध्यात्मिक संदेश देकर यह साहित्य जनमानस तक पहुँचा। यही कारण है कि नाथपंथ की वाणी आज भी लोकगीतों और संत परंपरा में जीवित है।नाथ साहित्य में जीवन को जटिल बनाने के बजाय इसकी सहजता पर जोर दिया गया। नाथ साधकों ने सादगीपूर्ण जीवन जीने के साथ-साथ गरिमा(संगीदगी)को व्यवहार का अंग बनाने पर बल दिया।

जैसे - "हबकि न बोलिबा, ठबकि न चलिबा,धीरे धरिबा पांऊँ।

गरब न करिबा, सहजै रहिबा, भणत गौरख राऊँ।।"-(गोरखवाणी सबदी-8 पृ.-3) गुरु गोरखनाथ उपदेश है कि योगी को आवेश में नहीं बोलना चाहिए और न ही दिखावे के लिए चलना चाहिए। उसे अहंकार त्याग कर धैर्य के साथ हर कदम उठाना चाहिए और सदा स्वाभाविक(सहज) शांति में रहना चाहिए।

"मन ही मन का भेद है, मन ही मन का रोग।"- सरलता और संक्षिप्तता से मन की साधना का संकेत देती है।

नाथ साहित्य की भाषा सरल, संक्षिप्त और सारगर्भित है,थोड़े शब्दों में गहरा आध्यात्मिक संदेश देती है।

3) प्रतीकात्मकता, गूढ़ार्थ और बिंब:

योग और साधना के गहन अनुभवों को सीधे शब्दों में व्यक्त करना कठिन था, इसलिए नाथ योगियों ने प्रतीकों और बिंबों का,रूपकों का सहारा लिया।प्रतीकात्मक भाषा से साधना, योग, समाधि, कुंडलिनी, शून्य, आकाश, ज्योति और गुरु जैसे आध्यात्मिक तत्वों को प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया गया।प्रतीकात्मकता और गूढ़ार्थ का प्रयोग साधना और योग के रहस्यात्मक अनुभवों को व्यक्त करने का माध्यम है। ये बिंब मुख्यतः लोकजीवन और प्रकृति से लिए गए हैं, जैसे - जल, अग्नि, आकाश, पशु-पक्षी और ग्रामीण जीवन। इन बिंबों के माध्यम से कठिन योगिक अनुभवों को सरल और प्रभावशाली रूप में व्यक्त किया है।प्रतीकों,बिंबों के माध्यम से साधक को आत्मज्ञान और समाधि की ओर प्रेरित किया है।इन प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने रहस्यात्मक और आध्यात्मिक विचारों को जनसामान्य तक पहुँचाया।

"पानी में आग जले, पत्थर तरे।"-(सिद्धगाथाएँ, पृ.72) विरोधाभासी प्रतीक और साधना की रहस्यात्मकता और योगिक अनुभव का प्रतीक है।

"साँचे गुरु की बात सुनो।"(भर्तृहरि नाथ की वाणी) यहाँ"साँचा गुरु" प्रतीक है सच्चे मार्गदर्शक का, जो साधक को आत्मज्ञान की ओर ले जाता है।

"गगन मंडल भीतर जोति जगे।"-(गोरखबानी"- पृ.154)) यहाँ "गगन मंडल" शरीर के भीतर स्थित आध्यात्मिक आकाश का बिंब है और "जोति" आत्मज्ञान का प्रतीक है।

"सहस्रदल कमल भीतर बासा।" ये प्रतीक योग साधना के रहस्य को दर्शाते हैं।

नाथ साहित्य में उपदेशात्मकता के साथ प्रतीकात्मकता और रहस्यात्मक अनुभव का कलात्मक रूपांतरण है।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-4 | March – April 2026

4) उलटबासियाँ:

नाथों की साधना में इंद्रिय निग्रह के बाद प्राण साधना तथा उसके पश्चात मन साधना का क्रम है। मन साधना से तात्पर्य है मन को संसार से खींच कर अंत करण की ओर उन्मुख कर देना।मन की स्वाभाविक गति है बाहरी जगत की ओर रहना उसे पलट कर अंतर जगत की ओर करने वाली इस प्रक्रिया को उल्टी चाल कहते हैं।इस प्रक्रिया की अभिव्यक्ति नाथों ने कई प्रतीकों के माध्यम से की है। उसे उलटबासियाँ कहते हैं।

जैसे – सरवर फूल कुमुदनी, पवनैं सोखिया नीर।

अकल की बाड़ी उपजी, तहाँ कहै गोरख गंभीर॥"-(नाथसंप्रदाय-आ.ह.द्विवेदी,पृ.124)

(अर्थात:जब शरीर रूपी सरोवर में ज्ञान की कुमुदनी खिलती है, तो वासनाओं का जल सूख जाता है।

"बरसै कंबल भीजै पांणी, बूझै कोई बिरला गियांनी।

तलै की धरणी ऊपरि धरी, गोरख बोल्याबिचारी॥"-गोरख-बानी(सबदी-10 पृ.4)

"पानी में आग जले, पत्थर तरे।" - (गोरखबानी) यहाँ पानी में आग जलने और पत्थर के तैरने जैसी असंभव बातें कही गई हैं, जो साधना की रहस्यात्मकता का प्रतीक हैं।

"अंधा देखे, बहरा सुने।"- (सिद्ध गाथाएँ)- साधना की आंतरिक दृष्टि और श्रवण शक्ति का प्रतीक है।

गाडि पडरवा बाँधिलै खूँटा।चलै दमामा बाजिलै ऊँटा॥

कउवा की डाली पीपल बासौ।मूसा के सबद बिलइया नासै॥

चले बटावा थ की बाट।सोवै डुकरिया ठौरै खाट॥

ढूकिले कूकर भूकिले चोर।काढै धणीं पुकारै ढोर॥

ऊजड़ खेड़ा नगर मझारी।तलि गागर ऊपर पणिहारी॥

मगरी परि चूल्हा धुँधाई।पोवणहारी को रोटी खाइ॥

कामिनी जलै अंगीठी तापै।बिचि बैसंदर थरहर काँपै॥

एक जु रढिया रढती आई।बहू बिवाई सासू जाई॥

नगरी कौ पांणी कूवै आवै।उलटी चर्चा गोरख गावै॥-(गोरखनाथ)(गोरखबानी, पृ - 90–110)

यह शैली विरोधाभासी, रहस्यात्मक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति का रूप है, जिसमें साधारण शब्दों के माध्यम से गहन आध्यात्मिक अर्थ छिपा होता है। उलटबासी नाथपंथ साहित्य की सबसे रहस्यात्मक और प्रतीकात्मक शैली है। यह साधक को साधना के गूढ़ रहस्यों की ओर संकेत करती है और उसे आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है। उलटबाँसी में विरोधाभास आध्यात्मिक अनुभव का प्रतीकात्मक रूपांतरण है।

5) रहस्यवाद:

जब कोई रचनाकार 'अज्ञात' या 'अगोचर' सत्ता के प्रति अपनी जिज्ञासा, प्रेम, विरह या मिलन के भाव व्यक्त करता है, तो उसे साहित्य में 'रहस्यवाद' कहा जाता है।

आ.रामचंद्र शुक्ल के अनुसार - "साधना के क्षेत्र में जो 'अद्वैतवाद' है, काव्य के क्षेत्र में वही 'रहस्यवाद' है।"उन्होंने इसे आत्मा और परमात्मा के मिलन की भावनात्मक अभिव्यक्ति माना है।

उसी प्रकार महादेवी वर्माने - "रहस्यवाद को सृष्टि के कण-कणमें उस असीम सत्ता का अनुभव करना और उसके प्रति अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करना ऐसा माना।"

(जहाँ आ.शुक्ल इसे साधना के 'अद्वैत' का काव्य रूप मानते हैं, वहीं महादेवी वर्मा इसे प्रकृति के कण-कण में परमात्मा को महसूस करने की 'संवेदना' कहती हैं।)

रहस्यवाद के मुख्य रूप

क)साधनात्मक रहस्यवाद - इसमें योग-साधना, कुंडलिनी जागरण, षट्चक्र भेदन और इड़ा-पिंगला-सुषुम्ना नाड़ियों के माध्यम से उस परम तत्व को पाने का प्रयास होता है। यह हृदय

की अपेक्षा 'मस्तिष्क' और 'तप' पर आधारित है।(गोरखनाथ की उलटबासियाँ और योगपरक रचनाएँ।)

ख)भावनात्मक रहस्यवाद - इसमें साधक ईश्वर को अपना 'प्रियतम' या 'आराध्य' मानकर उसके प्रति प्रेम और विरह की भावना प्रकट करता है। इसमें हृदय की प्रधानता होती है।

उदा."अंजन तजि जब निरंजन होई, तब फिरि जनम न लेई कोई।"- (हिंदी साहित्य का इतिहास' - आ.शुक्ल पृष्ठ.28)(अद्वैत रहस्यवाद)-परमात्मा को 'निरंजन' (माया से रहित)मानकर उसमें विलीन होना ही साधना का अंतिम लक्ष्य है।

उदा. "गगन सिखर महिं बालक बोलै ताका नाँव धरहुगे भाई।"- 'गोरखबानी' (सं. डॉ.बड़थ्वाल सबदी-1,पृ.1,)('गगन' (मस्तिष्क का ऊपरी भाग)में गूँजनेवाले नाद को एक बालक के रूप में कल्पित किया गया है, जो अनिर्वचनीय है।)

शरीर(काया)के भीतर ही परमात्माको खोजने की प्रक्रिया नाथों के रहस्यवाद का मूल आधार है।

उदा -"निरंतर खेलै नाना रूपा, अकथ कहानी देखि स्वरूपा। - ('नाथ-सिद्धों की बानियाँ' आ.ह.प्र.द्विवेदी,पृ.45)

नाथ साहित्य में रहस्यवाद का प्रयोग साधना की अवस्थाओं को व्यक्त करने के लिए किया।यह साधक को बाह्य जगत से हटाकर आंतरिक आत्मबोध की ओर ले जाता है।

6) संवाद और प्रश्नोत्तर शैली:

नाथपंथ साहित्य में (संवाद और प्रश्नोत्तर) गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित यह शैली साधना और योग के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट करने का माध्यम रही। इसमें गुरु प्रश्नों के उत्तर देकर शिष्य को मार्गदर्शन देता है, जिससे साहित्य उपदेशात्मक और शिक्षाप्रद बनता है।गुरु और शिष्य के बीच प्रश्नोत्तर के रूप में विचारों का आदान-प्रदान होता है। प्रश्नोत्तर शैली साधक को साधना के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है।जटिल योगिक अवधारणाओं को प्रश्नोत्तर के माध्यम से सरल रूप में समझाया जाता है।संवाद शैली में लोकभाषा और बोलियों का सहज प्रयोग मिलता है, जिससे यह जनसुलभ बनती है।

शिष्य का प्रश्न: "गुरुजी, आत्मा कहाँ निवास करती है?

गुरु का उत्तर: "मन ही मन साधो, मन ही मन जपो।" - प्रश्नोत्तर शैली के माध्यमसे आत्मा और साधना का रहस्य स्पष्ट किया गया है। -(गोरख-बानी-संपा.ह.प्र.द्विवेदी, पृ.25–26.)

शिष्य का प्रश्न - "कहाँ बसै गुरुदेव?"

गुरु का उत्तर - "जहाँ शून्य समाधि।"-(गोरख-बानी- पृ.52)

प्रश्न: "समाधि का स्वरूप क्या है?"उत्तर: "सहज समाधि सदा सुखकारी।"-(सिद्ध गाथाएँ) संक्षिप्त उत्तर में समाधि की महत्ता को स्पष्ट किया गया है।

प्रश्न: "गुरु का महत्व क्या है?"उत्तर: "साँचे गुरु की बात सुनो।"-(भर्तृहरि नाथ की वाणी) गुरु की महत्ता को संक्षिप्त और उपदेशात्मक शैली में व्यक्त किया गया है।

संवाद और प्रश्नोत्तर शिल्प नाथपंथ साहित्य की सबसे प्रभावी शैली है। यह साधक को सीधे संबोधित करती है और उसे साधना के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। इस शैली में गुरु-शिष्य परंपरा की झलक मिलती है, जो भारतीय संत साहित्य की मूल आत्मा है।

7) मुक्तक शैली:

नाथ साहित्य में उपदेशात्मकता और साधना के सिद्धांतों को संक्षिप्त रूप में कहने के लिए'मुक्तक शैली' का प्रयोग किया गया है। मुक्तक - वह काव्य जहाँ प्रत्येक छंद अपने आप में पूर्ण होता है और उसे समझने के लिए आगे-पीछे के प्रसंग की आवश्यकता नहीं होती।नाथों की 'सबदी'(साखी)मुक्तक शैली में है।

1.उपदेशात्मक मुक्तक - सामाजिक आचरण और इंद्रिय निग्रह की शिक्षा दी।

उदा-"हबकि न बोलिबा, ठबकि न चलिबा,धीरे धरिबा पांव।
गरब न करिबा, सहजे रहिबा, भणत गौरख रांव॥"-('गोरख-बानी' सं.डॉ.बड़थ्वाल,सबदी-2, पृ.2(यह एक स्वतंत्र छंद है जो धैर्य और सहजता का उपदेश देता है।)

2. साधनात्मक मुक्तक -

उदा."नौलख पातरी आगे नाचै, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा॥"-('गोरखबानी'-डॉ.बड़थ्वाल,सबदी-120, पृ.42)(यहाँ 'मन' को वश में करने की साधना का वर्णन बिना किसी कथा के स्वतंत्र रूप से किया गया है।)

3. दार्शनिक मुक्तक -

उदा-"अंजन तजि जब निरंजन होई, तब फिरि जनम न लेई कोई।"-('हिंदी साहित्य का इतिहास',आ.शुक्ल,पृ-28)

4. गेय पद -

उदा.-"अवधू ऐसा ज्ञान विचारै, आपै आपै आप निस्तारै।"-('नाथ-सिद्धों की बानियाँ'- आ.ह.प्र.द्विवेदी,पद-2 पृ.48)

नाथों ने आध्यात्मिक अनुभवों और साधना के उपदेशों को संक्षिप्त, स्वतंत्र पदों में गहन भावार्थ से सीधे साधक को आत्मज्ञान के मार्ग के लिए संबोधित किया।मुक्तक शैली साहित्य को जनसुलभ बनाती है और लोकगीतों की तरह गाई जाने योग्य भी है।आज भी लोकजीवन और संत परंपरा में मुक्तक शैली के कारण नाथ साहित्य जीवित है।

8) छंद (दोहा, चौपाई, सोरठा, पद आदि का प्रयोग):

योग और साधना के गूढ़ विचारों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए नाथ योगियों ने विभिन्न छंदों और काव्यरूपों का प्रयोग किया। इससे साहित्य में लयात्मकता, संगीतात्मकता और जनसुलभता आई। छंद और रचना-विधान (दोहा, चौपाई, सोरठा और पद) नाथपंथ साहित्य की लयात्मकता और जनसुलभता को स्पष्ट करते हैं। यह शैली नाथों के उपदेश को सरल और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करती है। नाथ साहित्य का छंद-विधान इसे लोकगीतों और संत परंपरा से जोड़ता है, जिससे यह आज भी लोकजीवन में जीवित है।दोहा और चौपाई नाथ साहित्य में आध्यात्मिक और योगिक विचारों के संप्रेषण के लिए आदर्श छंद हैं।

1. दोहा:

नाथों ने दोहा छंद का प्रयोग उपदेशात्मक शैली में 'साखी' की तरह किया है।

"मन का मारब घट का हारब, पिरण का पेलब जानं।
पवन का पूरब गगन का घोरब, गोरख कहै विचारं॥"-गोरखबानी(सबदी-115,पृ.39)

"हँसिबा खेलिबा धरिबा ध्यानं, अहिनिसि कथिबा ब्रह्म गियानं।
हँसै खेलै न करै मन भंग, ते निहचल सदा नाथ के संग॥"-(गोरखबानी,सबदी-10 पृ.35)

2. चौपाई:

विषय के विस्तार और साधनात्मक प्रक्रियाओं(जैसे हठयोग की व्याख्या)को समझाने के लिए चौपाई का प्रयोग किया गया है। गोरखनाथ की रचना 'आत्म-बोध' में इसका सुंदर प्रयोग है।

"उत्पति हिंदू जरणम जोगी अकल परी मुसल्मांनी।
ते राह चीन्हाँ गोरख देव्या सबद की सार पिछांनी॥"-(गोरखबानी,आत्म-बोध,पृ.186)

आध्यात्मिक दर्शन को क्रमबद्ध तरीके से समझाने के लिए चौपाई का उपयोग किया गया है।

"पवन अधारि भया आकास, अकल रूप तहाँ भया प्रकास।
सहज सुंनि मधि उपन्या गियान, निरभै भया तहाँ मिट्या धियान॥"-(गोरखबानी,आत्म-बोध,पृ.187)

3. सोरठा:

दोहे के उलट क्रमवाले इस छंद का प्रयोग भी नाथों ने अपनी वाणियों में विरोधाभास या चमत्कार पैदा करने के लिए किया है।

"गगन सिषर महिं बालक बोलै, ताका नांव धरहुगे कैसा।
अकल अगोचर सिधि तहां उपजी, गोरख बोल्या ऐसा।।"-(गोरख-बानी,सबदी-6,पृ.3)

"हबकि न बोलिबा ठबकि न चलिबा, धीरे धरिबा पांव।
गरब न करिबा सहजै रहिबा, भगत गोरख रांव ।।-(गोरख-बानी,सबदी-8,पृ.3)

4. पद (राग-रामश्री):

नाथ योगी अपने संदेशों को गाकर सुनाते थे, इसलिए उनमें गेयता और संगीत का विशेष महत्त्व है। ये पद अक्सर 'राग रामश्री' या 'राग भैरवी' में निबद्ध होते हैं। इन पदों में संगीत और लय का सुंदर मिश्रण है, जो जनमानस में गाये जाते थे।

"अवधू रहिया हाटे बाटे रूप बिरष की छाया।
तजिबा काम क्रोध लोभ मोह संसार की माया।।
कथबा ब्रह्म गियान लेबा आत्म ध्यान।।"-(गोरखबानी,डॉ.बड़थ्वाल,पद-1पृ.85)

"निरंजन रंमैया रै, औरा नहिं दूजा।,
ताका जप तप संयम, ताकी करौ पूजा।।"(गोरखबानी,डॉ.बड़थ्वाल,पद-2 पृ.85)

"अवधू ऐसा गियान विचारि।पंद्रह तिथि सातौ वारि,अठारह पुराण तहाँ एकहिं सारि।।"-(नाथसंप्रदाय,ह.प्र.द्विवेदी,पृ.138)

निष्कर्ष :

नाथ साहित्य भारतीय साहित्य और संस्कृति में सहज, व्यावहारिक और अनुभवाधारित अध्यात्म का प्रतिनिधित्व करता है। इसकी भाषा, शैली और शिल्प जीवन के यथार्थ और आत्मानुभूति की सीधी अभिव्यक्ति है।इसकी शिल्पगत विशिष्टता इस बात में निहित है कि वह आध्यात्मिक अनुभव को लोकभाषा और प्रतीकात्मक संरचना में ढालता है।इनकी भाषा सरल है परंतु अर्थ गूढ़; इनकी रचना रूपकात्मक है परंतु भाव विशुद्ध।नाथपंथ साहित्य में शिल्प भाषिक संरचना के साथ आत्मानुभूति का साधन भी है।इसके माध्यम से भारतीय दर्शन, योग और कला का एक अद्वितीय संगम दिखाई देता है, हिंदी में योग साधना, गुरुभक्ति, और सामाजिक सुधार की गहन परंपरा स्थापित की।,नाथ साहित्य की विचारधारा ने संत साहित्य, भक्तिकाल तथा हिंदी की सामाजिक चेतना के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।नाथ साहित्य आज भी जीवन-जिज्ञासुओं, शोधकर्ताओं और आध्यात्मिक साधकों के लिए प्रेरणास्रोत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. हजारीप्रसाद द्विवेदी - गोरखबानी, राजकमल प्रकाशन, 1958, पृ.22,23,25,26,87,88, 90,91.
2. रामनाथ दत्त – हिन्दी के सिद्ध-साहित्य का इतिहास, प्रयाग:लोकभारती प्रकाशन, 1980, पृ.51.53, 54, 58, 59.
3. विमलचन्द्र मिश्र, नाथपंथ और भक्ति आंदोलन, चौखम्बा प्रकाशन, 2005, , पृ. 130–131. पृ.126–128.
4. डॉ.पिताम्बरदत्त बड़थ्वाल 'गोरखबानी' हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग. पद-1,2 पृ.85,सबदी- 6,पृ.3, सबदी-8,पृ.3, आत्म-बोध,पृ.187, सबदी-115,पृ.39, सबदी-10 पृ.35, सबदी-120, पृ.42

5. डॉ.वंदना मिश्रा - संत साहित्य की अभिव्यंजना पद्धति एवं सिद्ध नाथ साहित्य,विकास प्रकाशन कानपुर,प्रथम संस्करण - 2015.पृ .63,82,
6. सिद्धिनाथ तिवारी – निर्गुण काव्य दर्शन,क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी,नयी दिल्ली,प्रथम संस्करण :2008.पृ.26.
7. हरिनारायण प्रसाद - "नाथ साहित्य में योगिक प्रतीक-विधान," भारती, खंड 12, अंक 4, 2012, पृ.208–209.
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी – नाथ सम्प्रदाय, राजकमल प्रकाशन, पृ.124,145, 178.
9. डॉ.विजयकुमार डी भाभोर – हिंदी साहित्य का अभिनव इतिहास,पैराडाइज पब्लिशर्स,2020 पृ,76,77.
10. डॉ.नगेन्द्र - हिंदी साहित्य का इतिहास,मयुर पेपर बैक्स ,नोएडा - 2004 , सं.पृ-67.
11. आ.रामचन्द्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास,विश्वभारती प्रकाशन - 2005 पृ –29,30,33 ,34.
12. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी -'नाथ-सिद्धों की बानियाँ',पृ – 48 .
13. हजारी प्रसाद द्विवेदी – हिंदी साहित्य की भूमिका,राजकमल प्रकाशन-2010, पृष्ठ.45.
14. डॉ.पिताम्बरदत्त बड़थ्वाल -'गोरखबानी' हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागlपद1, पृ-51,90–110 .
15. आ.रामचंद्र शुक्ल – हिंदी साहित्य का इतिहास',नागरी प्रचारिणी सभा काशी,आदिकाल, प्रकरण-2 (अपभ्रंश काव्य), पृ.28.
16. डॉ.रामकुमार वर्मा-'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास',नाथसाहित्य खंड, पृष्ठ.145 ,148.